Date: 2/9/2023

Unit C

Q. कृपाल सिंह शेखावत के चित्रकला में दिये अभूतपूर्व योगदान का उल्लेख करो।

उत्तर कृपाल सिंह शेखावत का जन्म 1922 ई.वी. में राजस्थान राज्य के सीकर जिले में श्रीमाधोपुर के पास मऊ काल गांव में हुआ था।
इनकी शिक्षा शान्तिनिकेतन से हुई और यहां से डिप्लोमा किया। इसके पश्चात् जापान के टोक्यो विश्वविद्यालय में पोस्ट डिप्लोमा किया। यहां से ओरेंटल आर्ट का डिप्लोमा करने के पश्चात भारत लौटे और जयपुर राजघराने द्वारा सन्चालित सवाई राम सिंह शिल्प कला मन्दिर के निर्देशक बन गए। महारानी गायत्री देवी की कला के प्रति असीम रुचि होने के कारण कला विकास में भरपूर आर्थिक मदद इन संस्थाओं को मिलती रही जिसके परिणामस्वरूप भारतीय चित्रकला एवं मिट्टी के बर्तन को सयुक्त रूप से ब्लू पोटरी का विकास किया। जिसकी प्रेरणा चाइनीज एवं जापानी चित्रित

मिट्टी के बर्तनों से मिली।
कुछ ही समय पश्चात ब्लू पोटरी अर्थात् मिट्टी के बर्तनो पर केवल नीले रंग से विभिन्न प्रकार के पक्षियों कपड़े, फूलों को चित्रित करके अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की चित्रकला का निर्माण किया इसलिए ~~कृपाल~~ कृपाल सिंह शेखावत को ब्लू पोटरी का जनक कहा जाता है।

इसके अतिरिक्त इन्होंने भित्ति चित्रण का कार्य भी किया। इनके प्रिय शिष्यों में भवानी शंकर तथा हेमन्त शौन को माना गया। इनकी चित्र शैली में ~~काव्यात्मकता~~ ~~का~~ काव्यात्मकता है।
अब इनकी ब्लू पोटरी का कार्य इनकी तीन बेटियाँ मीना श्री हिमानी और कुमुद राठौड़ सम्भालती है।

पुरस्कार :-
1. 1974 ई. में पद्मश्री का पुरस्कार मिला।
2. 2002 में शिल्प गुरु का पुरस्कार मिला।
15 फरवरी 2008 में मृत्यु हो गई।

Date 9/3/2023

परमानन्द चोयल -(P.N चोयल)

Q. P.N चोयल की कला शैली का उल्लेख कीजिए।

Ans. परमानन्द चोयल का जन्म 5 जनवरी 1924 को कोटा शहर में हुआ था। स्कूली शिक्षा के अलावा कला शिक्षा हेतु जयपुर के परम्परागत कलाकार कानूराम शर्मा से शिक्षा ली। कभी-कभी नाटक में रुचि होने के कारण नाट्य कला का भी अध्ययन किया जिसके परिणामस्वरूप 1968 में नाटक में डिप्लोमा पूरा किया। तथा 1960 में "चलते-फिरते भूत" नाटक का मंचन किया। जब वे कक्षा 10 में पढ़ते थे तो एक कला प्रदर्शनी में हंगरी की मैडम बेलट्सी चित्रों की प्रदर्शनी देखने आयी। उस समय वरिष्ठ चित्रकार रामगोपाल विजयवर्गीय तथा शैलेन्द्रनाथ डे से मुलाकात हुई। जिनसे प्रेरित होकर टेम्परा रंग योजना की कला सिखी। इनसे प्रेरित होकर इंदौर कला महाविद्यालय में कला शिक्षा हेतु प्रवेश

ले लिया। तथा डिप्लोमा पूरा किया। अब वह रामजस स्कूल में Drawing Teacher कार्य में लग गये। किन्तु कुछ समय पश्चात सर J J स्कूल ऑफ आर्ट में प्रवेश ले लिया। जो 1953 में डिप्लोमा पूरा किया। इसके पश्चात आगरा विश्वविद्यालय से हिन्दी में M.A. की डिग्री प्राप्त की इसके तत्काल बाद इंग्लैंड स्कूल ऑफ आर्ट लंदन से पोस्ट डिप्लोमा किया। इसके पश्चात भारत आने पर उदयपुर विश्व विद्यालय प्रोफेसर के पद पर नियुक्त मिली। जहाँ पर इम्पैस्टो तकनीक का विकास किया जिसमें तैल रंग पर नाइफ से सीधे कैनवास पर लगाकर चित्रण किया।

P.N. चोयल के चित्र एवं चित्र विषय:- प्राकृतिक दृश्य, पौराणिक आख्यान पर चित्रण, सामाजिक उत्पीड़न जीवन संघर्ष, इत्यादि विषयों पर चित्रण किया।

चित्र :-

परसेप्सन ऑफ उदयपुर भीति चित्र सेरूला, खपरैल, झोपड़ियों वाले पुराने मकानों पर उदासी भैंस, कुमैन, आग, थिड़किया उदयपुर धरती की मिट्टी, थके पत्थराये चेहरे, जीर्ण शीर्ण दरवाजे, छतरीयां मेहराब, कोठरे आदि को चित्रित किया।

RM चोयल बूमगो की एक पेंटिंग धान के खेत में कटे कटे नामक चित्र की नकल की। जिसको झोपड़ो में कटे नामक शीर्षक से प्रदर्शित किया।

1956 से 1960 के मध्य भैंसो को पर चित्रण किया। जिसे 1964 औरंगन की फिल्म कम्पनी ने अकेलो नामक शीर्षक से प्रदर्शित किया।
जिस पर 1961 में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया इसके अतिरिक्त 1965 व 1968 में पुरस्कृत हुए, तथा कलारत्न की उपाधि प्राप्त किये।

अमृतसर फाइन आर्ट अकादमी से पुरस्कृत किये गये। तथा कुछ ललित कला अकादमी द्वारा भी चुने गए। साथ ही और कई संस्था द्वारा पुरस्कार मिला 1987 में ग्राफिक बिनालय तथा 1989 हवाना बिनालय में पुरस्कृत हुए।

31 अगस्त 2012 में 88 वर्ष की उम्र में लम्बी बीमारी से लडते हुए उनका स्वर्गवास हो गया।

Date 11|9|2023

Unit - C

Q. श्री राम जैसवाल की कला यात्रा का वर्णन करो।

Ans. श्री राम जैसवाल का जन्म 5 सितम्बर 1937 को शाहाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ था। इन्होंने Goverment Collage of art and Craft लखनऊ से डिप्लोमा किया था। साथ ही M.A चित्रकला भी किया। इनके साथी चित्रकारों के पोट्रेट तेल रंग से बनाये जिसमें मुख्य रूप से सुधीर रंजन खास्तगीर असीत कुमार हल्दर श्रीधर मुख्य पात्र रहे मूर्तिकारों ने ~~H.Rie~~ राय चौधरी एवं श्रीराम वैश्य थे।

1953 से 1965 के मध्य वाश तकनीक व्यक्ति चित्रण, दृश्य चित्रण कस्बे की सुबह चित्रित किया। तथा टैम्परा पेंसिल, जलरंग, तैलरंग द्वारा पोट्रेट तैयार किये। जिसमें राधा कमल मदन श्रीमति कमला ~~क~~ वशिष्ठ के पोट्रेट बनायें गये।

श्रीराम जैसवाल का कार्य क्षेत्र :-

1. लखनऊ मैडिकल कॉलेज में आर्टिस्ट की नौकरी की।

2. 1961 में मेरठ कॉलेज में ~~मुख्य~~ प्राध्यापक रहे। जहाँ पर दूरी ईर एवं राधा कृष्ण का विश्व प्रसिद्ध ~~ख~~ चित्र बनाया।

3. दयानन्द सरस्वती पीजी कॉलेज अजमेर में HOD भी रहे। यहाँ पर टेम्परा तथा ऑयल कलर आंगन में दोपहरी, पूजा का दिन, स्ट्रीट सिंगल, प्रणय, आदि चित्र चित्रित किये।

पुरस्कार :-

1. 1997 में राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा कला ~~क~~ विदू का सम्मान मिला।

2. 1918 में राजस्थान साहित्य अकादमी द्वारा विशिष्ट साहित्य पुरस्कार से पुरस्कृत किया।

साहित्यिक रचनाएँ :-

1. कहानि संग्रह (a) अनुराधित
(b) ~~अम्लह~~ उगतह
(c) समय दंश
(d) ~~कि~~ विषजल

2. कविता (a) बिंब, प्रतिबिंब

उपरोक्त साहित्य प्रकाशित किये गए।

11/9/2023

Unit :- C

Q. भूर सिंह शेखावत की कला यात्रा का वर्णन कीजिए।

भूर सिंह शेखावत का जन्म 8 फरवरी 1914 में बीकानेर के धोंधलिया गांव में एक राजपूत परिवार में हुआ था। इनकी आर्थिक स्थिति सामान्य थी। 7 वर्ष की आयु में ही कला की रूचि होने के कारण मुल्ला परिवार द्वारा छात्रवृति दी गई। जिससे सर J.J. School of art से 1932 से 1937 में कला में डिप्लोमा किया। यहा पर सर चार्ल्स जिरार्ड से फ्रेस्को तकनीक तथा भीति चित्रण सीखा इसके पश्चात बिडला कॉलेज पिलानी में कला के शिक्षक रह कर सेवाएं देते रहे।

इनकी चित्रण शैली यथार्थवादी रही है। जिसमें टेम्परा, भीति चित्रण मुख्य है।

चित्र :-

ग्रामीण दृश्य, सांचे में चूर, सूतकातते आरा, मशीन बनाते,

पानी भरते, खाना पकाते, हाट बाजार, किसान दम्पति, जुलाहा, गंगोर पूजा, मंगल कामना, ~~गाडिया~~ गाडिया लोहार, गोधूली, दो दोस्त, ऊँठ, जुगाली करते हुए, पिछला युग के कर्णधार, विश्राम, मुख्य चित्र है।

इसके अतिरिक्त महात्मा गाँधी की यात्रा के प्रसंगो को टेम्परा से चित्रित किया गया है। ~~सब्जी~~ सब्जी तोड़ती मालिन, काव्य भक्त नेता, क्रान्तिकारी, शहीद, लोहपुरुष तथा सारंगी बजाते हुए कलाकार मुख्य चित्र हैं जो विश्व में अपनी ख्याति बनाये हुये हैं।

Date 12/9/2023

Unit - 6

Q. ऊषा रानी हूजा की मूर्ति शिल्प योगदान का वर्णन करो ।

Ans. ऊषा रानी हूजा का जन्म 18 मई 1923 में भारत में हुआ । इन्होंने प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने के बाद दिल्ली से दर्शनशास्त्र में M.A. किया । इनकी रूचि मूर्ति कला में होने से लंदन जाकर 1949 से 1954 के मध्य रिजेन्ट-स्ट्रीट पोलो टैक्नीक कॉलेज से मूर्ति कला में डिप्लोमा किया इनकी रूचि मूर्ति और गीत दोनो में थी । इसलिए इनका कविता संग्रह भी श्रेष्ठ है । 1949 में भूपेन्द्र हूजा से शादी हुई 1959 में सपरिवार जयपुर में बस गये । यहाँ पर मूर्तिकला का विशाल कार्य क्षेत्र चुना जिसमें लोहा प्लास्टर काँच, चट्टान, पत्थर, प्लास्टर ऑफ पेरिस, मोर्तार धातु को माध्यम बनाये इनकी मुख्य मूर्ति शिल्प में डेयर डेविल तथा कंकाल नामक मूर्ति मानी गयी ।

पुरस्कार :-

1. राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा 1990 में फैलो चुना गया।

2. राजस्थान सरकार द्वारा 1982 में भी पुरस्कार दिया गया।

3. मेवाड़ फाउण्डेशन द्वारा 1985 में सज्जन सिंह पुरस्कार दिया गया।

4 आई. ए. एफ. सी. एस. (IAFCS) द्वारा 1988 में अनुभव चित्रकार का पुरस्कार दिया।

5. 1993 में यूक्रेन सरकार द्वारा उत्कृष्टता का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

22 मई 2013 को सृजित कार्य करते हुए इन्होंने अन्तिम सांस ली।

Ranjita
13-9-23

Date ____
Page ____

Q. MF हुसैन के चित्रो का विश्लेषणात्मक अध्ययन कीजिए तथा फिल्म जगत में दिए गए योग-दान का उल्लेख कीजिए

Q. सयद् हैदर रजा की चित्रशैली एवं चित्रो का वर्णन कीजिए,

Q. KH आरा एवं FM सुजा की चित्रशैली का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

13/9/23

Date 14 / 9 / 2023

Q. देवी प्रसाद राय चौधरी के मूर्ति कला का वर्णन किजिए ।

Ans: D.P राय चौधरी का जन्म 15 जून 1899 में तेज हट रंगपुर जिले में हुआ था । जो अब मीरपुर जिले आता हैं। इनका कार्य मूर्तिकला के क्षेत्र में अधिक रहा वैसे तो चित्रकला, मूर्तिकला, कुश्ती खेलना, बांसुरी वादन, शिकार व लघु कहानियाँ पर भी प्रयाप्त कार्य किया और विद्यार्थी अवस्था में उन्होंने धन अर्जित भी किया ।

परिवारिक स्थिति :-
ये सामान्य परिवार से तालुक रखते है । बंगाल शैली से अपना सम्बन्ध रखते हैं। इनकी पत्नी का नाम चारुलता राय चौधरी तथा पुत्र का नाम भास्कर रॉय चौधरी हैं।

चित्रण शैली :-
चौधरी जी ने जलरंग में अभिव्यक्तिवादी परिदृश्य का चित्रण किया हैं। जिसके विषय सामाजिक अर्थात को चित्रण करना होता हैं। मूर्ति कला के क्षेत्र में फ्रांसीसी शैली से प्रभावित थे इनका सर्वश्रेष्ठ कास्य मूर्ति श्रम हैं। जो पटना के सचिवालय के बाहर शहीद स्मारक बनाया गया । जो कास्य द्वारा बनाया हुआ है जिसमें 7 आदमी ग्रुप में एक दूसरे के पीछे धोती कुर्ता पहने हुए है जो एक दुसरे को सम्ब्ल इंगित निर्देशित कर रहे है।

Page No.

Date ___ / ___ / ___

यह समूह किसी विरोध की ओर इशारा कर रहा है। जिसमें सबसे आगे के व्यक्ति के हाथ में झण्डा है। तथा इसरे हाथ से किसी गंतव्य स्थान कि ओर इशारा कर रहा है। पीछे के तीन व्यक्ति इस आगे वाले व्यक्ति के निर्देशन पर तेज गति से चल रहे हैं। जो गिरते हुए से प्रतीत होते हैं। इस मूर्ति शिल्प को 1956 में सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित किया।

① P रॉय चौधरी के प्रमुख चित्र :-

1. भुटिया औरत
2. तिब्बत की बालिका
3. नेपाली लड़की
4. पुजारिन
5. आतरनाक मार्ग
6. शहीद स्मृति
7. तूफान के बाद
8. पुल
9. दुर्गा पूजा
10. शोभा यात्रा
11. ग्रीन एण्ड गोर्ड गोल्ड
12. कौतूहल
13. जीवन
14. पशु अध्ययन
15. भारती
16. अभिसारिका
17. श्रम की विजय मूर्ति शिल्प प्रमुख हैं।

पुरस्कार :-

1. 1958 में पद्मभूषण पुरस्कार
2. 1962 में ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा फैलो चुना गया।
3. ऑडर ऑफ ब्रिटिश अमपायर एमपायर MBE के सदस्य बनाये गये।
4. ललित कला अकादमी के संस्थापक व अध्यक्ष रहे।

15 अक्टूबर 1975 में दिल्ली में मृत्यु हो गई।

Q. राम किंकर बैज की मूर्तिकला में वर्णन कीजिए

राम किंकर बैज का जन्म 1906 में बांकुरा के समीप जुग्गी पहाड़ी में हुआ। इनकी प्राथमिक शिक्षा बांकुड़ा में हुई थी। इसके पश्चात 1925 में मार्डन रिव्यू के संस्थापक रामानंदाचार्य चटर्जी ने इनकी कला कृति का प्रतिमा को देखते हुए शान्ति निकेतन में नन्दलाल बसु के पास दाखिला करवा दीया। ये संगीत, नाटक, कविता एवं चित्रकला में भी रूचि रखते थे। और विद्यार्थी अवस्था में धन अर्जित भी किया। 1935 व 1940 के मध्य अनेक मूर्तिशिल्प का निर्माण किया जिसमें सुजाता, संथाल परिवार, कन्या, तथा कुत्ता अनाज की औसाई मुख्य हैं।

प्रदर्शनी :-

1. 1950 में इंडियन सोसाईटी ऑफ ओरियंटल आर्ट कलकत्ता में प्रदर्शनी करवाई
2. 1951 में एशियन कला प्रदर्शनी टोक्यो में हुई।
3. 1951 में रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया के ऑफिस में के सामने 24 फीट ऊँची दो प्रतिमा लगाई जो बहुत ही सुन्दर है।
4. 1976 मे ललित कला अकादमी का फैलो चुना गया।

कार्य क्षेत्र :-

1925 से 1962 तक शान्ति निकेतन मे ही एक मूर्तिकार शिक्षक के रूप में

Date ___/___/_____

जीवन व्यतीत व्यतीत किया। इन्होंने विवाह नहीं किया और चिन्ता मुक्त जीवन व्यतीत करते हुए मूर्तिकला के साथ लागर चित्र भी बनाएँ।

→ मूर्तिकला के लिए सीमेंट, प्लास्टर ऑफ पेरिस पत्थर का प्रयोग किया। तैल रंगों में भवन प्रकृति अनेक प्रकार के डिजाइन बनाये।

→ नन्दलाल बसु को इनकी शैली पर कुछ विरोध हुआ क्योंकि ये उन्मुक्त चित्रांकन कर रहे थे। इसलिए इनकी लड़ाई हो गई। और विनोद मुखर्जी मुखर्जी से शिक्षा लेने लगे बुद्ध व गाँधी के विषय पर सर्वाधिक कार्य किया। जिसमें पाश्चमी धारणाओं से मुक्त अमूर्त वास्तविकता स्वयं की शैली विकसीत की।

→ अकाल पीड़ित मूर्ति शिल्प में खुली हुई फसलियाँ बनाई जो ऐसा प्रतित होता है। जैसे बुद्ध तपस्या कर रहे हो।

→ चित्रकला में जल रंग द्वारा झूलती लटकी मानवाकृतियाँ बनायी।

1 अगस्त 1980 को उनकी मृत्यु हो गई।

Q. सखो चौधरी की मूर्तिकला का विकास क्रम व योगदान लिखिए।

Ans. संखो चौधरी का जन्म 25 फरवरी 1916 को हुआ था इनका वास्तविक नाम राम-नारायण है किन्तु घर में इनको संखो के नाम से बुलाते थे इसलिए संखो चौधरी के नाम से प्रसिद्ध हो गये।
आरम्भिक तौर पर घनवादी मूर्तिकार के रूप में कार्य किया। जिसके लिए स्तनवान लेओन्यी नामक कलाकार से प्रभावित हुए। आरम्भिक विषय में मुख्यतः महिला एवं वन्य जीव रहे हैं। साथ ही मीडिया पर भी प्रयाप्त काम किया। इनकी शिक्षा ~~1945~~ 1939 में शान्तिनिकेतन से स्नातक किया तथा 1945 में पोस्ट डिप्लोमा किया।

कार्य-क्षेत्र :-

1. तनजानिया के दार ए सलाम विश्वविद्यालय में कला शिक्षक रहे।
2. 1949 - 57 के मध्य बड़ोदरा विश्वविद्यालय में मूर्तिकला विभाग के प्रमुख रहे।
3. 1957 - 70 के मध्य बड़ोदरा विश्वविद्यालय में प्रोफेसर के पद पर रहे।
4. 1974 ललित कला अकादमी के सचिव रहे।
5. 1977 - 78 के मध्य विश्वभारती विश्वविद्यालय के फैलो रहे।
6. 1976 में B.H.U. मे विजिटिंग प्रोफेसर रहे।
7. 1986 में दार ए सलाम विश्व विद्यालय में प्रोफेसर के पद पर कार्य किया।
8. दिल्ली शहरी कला आयोग के पूर्ण कालीन सदस्य रहे।

Date __/__/____

9. हस्तशिल्प बोर्ड के सदस्य रहे।
10. भारत में पाँचवी त्रिवार्षिक अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी के ~~ज्यूरि~~ ~~के~~ ज्यूरि के सदस्य रहे।
11. ललित कला अकादमी के अध्यक्ष रहे

पुरस्कार :-

1. 1956 में ललित कला अकादमी द्वारा वार्षिक पुरस्कार।
2. 1971 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री का पुरस्कार मिला।
3. 1974 ई. वी. में डी.लिट. की मानद उपाधि दी गई।
4. 19~~7~~9 में विश्व भारती द्वारा अबान गगन पुरस्कार मिला।
5. 1988 में ललित कला अकादमी नई दिल्ली द्वारा फ़ैलो चुना गया।
6. 1997 में रविन्द्र भारती विश्व विद्यालय द्वारा डाक्टर कि उपाधि ली।
7. 1998 में भारतीय विश्वविद्यालय से देशीकोत्तम की उपाधि प्राप्त किये।
8. 2000 से 2002 में कालीदास सम्मान प्राप्त हुआ।
9. ~~2~~ 2002 मे आदित्य बिडला शिखर सम्मेलन में पुरस्कृत हुए।
10. 2004 में ललित कला अकादमी द्वारा कलारत्न की उपाधि ~~से~~ प्राप्त हुई।
11. 2004 में लाइफ टाइम अचिव मेन्ट से सम्मानित किया गया।
12.

Page No.

Date ___/___/______

प्रदर्शनी :-

1. 1956 में वन मैन श्यो (एकल प्रदर्शनी) लगाई। बम्बई
2. 1945 में समकालीन मूर्तिकला की प्रदर्शनी नेशनल गैलरी नई दिल्ली में लगाई।
3. 1957 में एकल प्रदर्शनी नई दिल्ली में।
4. 1969 में एकल प्रदर्शनी बम्बई में लगाई
5. 1971 में श्रद्ध व्यापी प्रदर्शनी नेशनल गैलरी नई दिल्ली में लगाई।
6. 1979 में रश चौधरी के साथ बम्बो ग्रुप शो का आयोजन किया।
7. 1991 में एकल प्रदर्शनी कलकत्ता में हुई।
8. 1992 में LTG गैलरी नई दिल्ली में एकल प्रदर्शनी लगाई।
9. 1995 में एकल प्रदर्शनी बम्बई में लगाई
10. 2004 में एकल प्रदर्शनी सृजन आर्ट गैलरी बड़ोदा में लगाई।

संखो चौधरी की विभिन्न कलात्मक भागेदारी :-

1. 1961 - 62 में युगोस्लाविया में मूर्तिकार संगोष्ठी में शामिल हुए।
2. 1963 में मकराना ललित कला अकादमी में मूर्ति शिविर का आयोजन में सम्मिलित हुए
3. 1964 में ~~पोलान~~ पोलैण्ड में मूर्तिकला आरव्यान में सम्मिलित हुए। तथा रूस व जापान का दौरा किया।।
4. 1969 में ललित कला अकादमी में भारत की लोक कला व जनजातियाँ कलाओं को (छवि) प्रदर्शित किया।

Page No. ______

Date __ / __ / ____

5\. 1972 में अखिल भारतीय हस्तशिल्प बोर्ड में ग्रामीण भारतीय परिवारों के चित्रों के विषयों पर प्रदर्शित किया।

6\. 1974 ई. में ब्रिटिश सरकार के प्रथम त्रिवार्षिकी प्रदेशनी में शामिल हुए।

7\. 1976 से 77 में ललित कला अकादमी के लिए चलाई गई में चित्रकारो एवं मूर्तिकारों के लिए स्टूडियो का आयोजन किया।

8\. 1982 में ब्रिटिश संग्रहालय द्वारा सेमिनार का आयोजन किया। जो भारत ~~महोत्~~ महोत्सव के नाम से जाना जाता है।

9\. 1983 में अन्तर्राष्ट्रीय कला महोत्सव बंगाल के ज्यूरी सदस्य रहे।

10\. 1985 ई.वी. में लोक विद्या व परम्परा के संरक्षण पर यूनेस्को व पेरिस में भारत का प्रतिनिधित्व किया।

12\. 1985 ई वी. में ~~बुखारेस्ट~~ बुखारेस्ट ग्राम संग्रहालय का दौरा किया।

13\. 1982 में यूनेस्को द्वारा वेनिस में अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व किया

14\. 1986 में ओलेस्का द्वारा लिली हगर में नृवंशविज्ञान संग्रहालय कोपन हेगन व डेनमार्क में ओपन एयर संग्रहालय का दौरा किया।

15\. 1988 में विजिटर कैलो चुना गया। जिसके तत्वाधान में जापान व इंडोनेशिया की यात्रा की।

16 1989 में चाइनीज ~~की पिपुल्स~~ पीपुल्स सोसायटी ~~का~~ फॉर फ्रेंडशिप संगोष्ठी में सम्मिलित किये।

17\. 2006 में 28 सितम्बर को उनका निधन हुआ।

Page No. ____

Q. सोमनाथ होरे की कला यात्रा पर टीप्पणी लिखिए।

Ans. सोमनाथ होरे का जन्म चटगाव में हुआ था। जो अभी बंगला देश में है। इनका जन्म 1921 में हुआ था।
इन्होंने प्राथमिक शिक्षा के पश्चात आर्ट एण्ड क्राफ्ट कर डिप्लोमा करने के पश्चात 1954 - 1958 तक इसी महाविद्यालय में आर्ट एण्ड क्राफ्ट महाविद्यालय में शिक्षक के रूप में कार्य किया।

1957 में कलकत्ता महाविद्यालय से कला में डिप्लोमा किया 1958 - 67 तक दिल्ली कला महाविद्यालय में ग्राफीक विभाग के प्रमुख रहे। तथा बरोदा कला महाविद्यालय में प्रिंसिपल शिक्षक हुए। 1967 ई. में शान्तिनिकेतन के कला भवन से ग्राफिक में अध्ययन किया। इसके पश्चात 1983 में तक विश्वभारती विश्वविद्यालय शान्तिनिकेतन के प्राचार्य रहे।

प्रदर्शनीयाँ :-

1. 1960 में लुगानो द्विवार्षिकी ग्राफीक कला की प्रदर्शनी की।
2. 1962 व 64 में टोक्यो द्विवार्षिकी प्रदर्शनी में छाप चित्र प्रदर्शित किये।
3. 1962 ई. में वेनिश में द्विवार्षिकी प्रदर्शनी में भाग लिया।
4. 1963 में साओ पाओलो में द्विवार्षिकी प्रदर्शनी की।

Date ___ /___ /______

5. 1974 में प्रथम अन्तराष्ट्रीय ग्राफिक प्रदर्शनी नई दिल्ली में सम्मिलित हुए।

पुरस्कार :-

1960, 1962, 1963 मे राष्ट्रीय पुरस्कार तथा 1981 मे ललित कला अकादमी नई दिल्ली के स्थायी सदस्य चुने गए।

इनकी विचारधारा साम्यवादी थी। कलात्मक क्षेत्र में ग्राफिक कला पर सर्वश्रेष्ठ कार्य किया।

[signature] 18/9/23

Date ___/___/______

Q. 1 हिम्मत शाह की मूर्तिकला का उल्लेख करो।

हिम्मतशाह का जन्म 1933 में गुजरात में लोथल के पास हुआ था। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा समीपवर्ती गांव से हुई। तथा सर जे० जे० स्कूल ऑफ आर्ट से Drawing Teacher की ट्रेनिंग करके कला शिक्षक बन गए। किन्तु बरोडरा स्कूल ऑफ आर्ट से कला डिप्लोमा किया इसके पश्चात 1967 में फ्रेंच छात्रवृत्ति लेकर फ्रांस चले गए। जहाँ पर एटेलिये-17 में अध्ययन किया। 1963 में ग्रुप 80 के सदस्य बन चुके थे।

फ्रांस से लौटने के पश्चात् सेन्ट जेवियर स्कूल के तीन भवनों के वास्तुकारिता तथा का कार्य किया।

इनकी चित्रकला मूर्त रूप में भी नहीं है। तथा अमूर्त रूप में भी नहीं है। बल्की दोनो के मध्य की कला है।

ये पिकासो की पेंटिंग ग्वेर्निका के समय में चित्रांकन किया।

कार्य क्षेत्र :-

चित्रकला, मूर्तिकला, ग्राफिक कला, रेखा चित्र फोटो, ग्राफी, मिट्टी का काम, टेराकोट, शैरेमिक चाँदी सोने के पत्र के शिल्प, एवं भित्ती चित्र मुख्यत: बनाये किन्तु टेराकोटा एवं चाँदी का काम सर्वप्रिय रहा है। चित्रकला के क्षेत्र में तेज चमकीले रंगो के साथ ग्रे कलर का प्रयोग आवश्य किया। इनकी कला का मूल विषय लोक कला व लोक जीवन है। दिल्ली की घड़ी कार्यशाला में काम किया

Date 21 / 9 / 2023

Q. धनराज भगत की मूर्तिकला का उल्लेख करो।

Ans. धनराज भगत का जन्म 1917 में लाहौर में हुआ था। जो वर्तमान में पाकिस्तान में आता है। इन्होंने लाहौर स्कूल कॉलेज कमाई से कला शिक्षा प्राप्त की। 1947 से 1949 में पंजाब कला महाविद्यालय से पोस्ट डिप्लोमा प्राप्त किया।

पुरस्कार :-

1. 1937 एवं 1947 में पंजाब ललित कला अकादमी से हैं राष्ट्रीय पुरस्कार मिला।
2. 1947 व 1949 में अखिल भारतीय ललित कला अकादमी व शिल्प सोसायटि द्वारा प्रथम पुरस्कार मिला।
3. 1948 व 1949 में दो बार मकबर्र सोसायटी द्वारा पुरस्कृत किया गया।
4. 1948 में ललित कला अकादमी कलकत्ता द्वारा स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ।
5. 1961 में ललित कला अकादमी नयी दिल्ली द्वारा राष्ट्रीय सम्मान मिला।
6. 1969 में साहित्य कला सास्कृप परिषद नयी दिल्ली द्वारा पुरस्कृत किया गया।
7. 1977 में भारत सरकार द्वारा पद्मश्री प्राप्त हुआ।

~~8. कार्य~~

कार्य :-

इन्होंने पेपर मैशीव एलुमीनीयम ताँबा पत्थर एव लकड़ी का कार्य किया। इन्होंने सर्वाधिक कार्य लकड़ी पर किया जो वास्तु शास्त्र से जुड़ी हुई। 1988 में मृत्यु हुई।

Page No.

Date 22 . 9 . 2023

Q. मृणालिनी मुखर्जी की मूर्तिकला का उल्लेख कीजिए

Ans. का जन्म 1949 में बम्बई में हुआ था। इनके पिता का नाम बेनार्ड मुखर्जी था जो चित्रकार थे। और इनकी माता जी का नाम लीला मुखर्जी था वह भी चित्रकार थी। इस प्रकार चित्रकार परिवार में पैदा हुई इकलौती संतान को चित्रकार बनने के लिए सुगम रास्ता मिल गया।

इनका पालन पोषण देहरादून उत्तराखण्ड राज्य में हुआ था इनकी प्राथमिक शिक्षा वेलहेम गर्ल्स स्कूल देहरादून में हुई। ~~किन्तु ग्रीष्म~~ किन्तु ग्रीष्म अवकाश में शान्ति निकेतन जाती रही जिससे चित्रकला के प्रति ज्ञान व आकर्षण बढ़ता गया इसके पश्चात् महाराजा सियाजी राव विश्वविद्यालय से B.A पास किया इसके पश्चात के जी सुब्रमण्यम से भित्ति चित्र में डिप्लोमा किया। यहां पर इतावली फ्रेस्को व अन्य पारम्परिक तकनीक से भित्ति चित्र की शिक्षा ली। जिसमें ब्रश के स्थान पर कपास की बनी हुई (हैण्डमेड स्वनिर्मित कपास की ब्रश) का प्रयोग करके भित्ति चित्रों का निर्माण किया।

1972 ई० वी० में श्रीधरानी आर्ट गैलरी में रेशों एवं बुने हुए रूपों का प्रयोग करके बनाये गए चित्रों का एकल प्रदर्शनी की जिससे प्राप्त ख्याति मिली। किन्तु इसके पश्चात् मूर्तिकला के प्रति झुकाव हो गया। उर्वरक देवताओं कामुकता व विचारोत्तेजक रूपों से प्रेरित रही इसी प्रेरणा से मूर्ति कला पर काम किया।

1971 ईवी में ब्रिटिश काउंसलिंग की छात्रवृत्ति मूर्ति कला के लिए मिली। जिसमें वेस्ट सरे कॉलेज ऑफ आर्ट एण्ड डिजाइन में 1978 तक मूर्तिकला का अध्ययन किया। जिसमें सेरेमिक, कांस्य फाइबर को माध्यम बनाया।

2000 ईवी के पश्चात कांस्य में कार्य किया। जिसमें पारम्परिक खोई हुई व मोम की प्रक्रिया से कार्य किया। जिसमें (BDS) " जिसमें दंत चिकित्सा में काम आने वाले औजारों का प्रयोग करके मूर्तियां बनाई।"

अन्य कलात्मक कार्य :-

→ 1994 में डेविड एलियर द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में आक्सफोर्ड का अवार्ड मिला। और यूनाइटेड किंगडम के कई शहरों में प्रदर्शनी लगाई।

→ 1996 में नीदरलैंड्स कार्य-शाला में भाग लिया।

→ 2019 में मैट्रो पॉलोटिंग म्यूजियम ऑफ आर्ट ने अमृत एवं मनालि मुखर्जी के चित्रों एवं मूर्तिकला की मर्णोपरान्त प्रदर्शनी लगाई।

कार्यशैली :-

→ इनकी कला ना तो पूर्णत: मूर्त है न ही पूर्णत: अमूर्त है। अर्थात पारम्परिक भारतीय एवं यूरोपियन कला के साथ लोक कला व आधुनिक डिजाइन को

एक साथ दर्शाया है, जिसमें कपास की रस्सी के द्वारा बनाई गई गाँठो को मूर्तिकला एवं चित्रकला में समावेश किया।

- "गाँठे अनेक है धागा एक है" शीर्षक का निबन्ध मृणालिनी मुखर्जी की मूर्तियों पर दीपक अन्तत ने लिखा है।

1915 ई०वी० में 65 वर्ष की आयु में इनकी मृत्यु हो गई।

Reviewed 23/9/23

मृणालि मुखर्जी की कलात्मक संग्रह :-

1. आधुनिक कला वीर्घा ऑक्सफॉर्ड
2. यार्क शायर मूर्ति पार्क, यार्क शायर में स्थित है
3. स्टेडोलिज्क संग्रहालय एम्स्टरडम
4. राष्ट्रीय आधुनिक कला गैलरी नई दिल्ली
5. रूपंकर कला संग्रह भारत भवन भोपाल
6. भारत पर्यटन विकास निगम
7. ललित कला संग्रालय पंजाब विश्व विद्यालय चंडीगढ़
8. दि इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ इम्यूनॉलोजी नई दिल्ली
9. टेप माडर्न लन्दन
10. सरकारी संग्रालय एवं आर्ट गैलरी नई दिल्ली
11. आधुनिक कला संग्रालय दि न्यूयॉर्क (अमेरिका)
12. मैट्रो पोलीटीन म्यूजियम ऑफ अमेरिका न्यूयार्क

5:48

ChatGPT — Sign up

नीचे मैं राजस्थान की तीन प्रमुख लोक चित्रकलाओं — **मांडना, फड़ (Phad / पिछवाई / फड), और शेखावाटी फ्रैसको (म्यूरल / भित्ति चित्र / Fresco walls of Shekhawati)** — पर विस्तार से जानकारी दे रहा हूँ। इसके बाद, मैं एक सुझाव दूँगा कि कैसे आप इसे पीडीएफ फॉर्म में संकलित कर सकते हैं।

राजस्थान की लोक चित्रकलाएँ — परिचय एवं विवरण

राजस्थान में लोक कला को दीवारों, फर्शों, कपड़ों और पवित्र वस्त्रों पर सजाने की प्रथा बहुत पुरानी है। ये कलाएँ न केवल सजावटी हैं, बल्कि धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक संदर्भों से भी जुड़ी हैं।

नीचे प्रत्येक कला-संप्रदाय का विस्तृत विवरण

Ask anything

1. मांडना (Mandana)

नाम एवं परिभाषा

- "मांडना" नाम संभवतः संस्कृत शब्द *मन्दन* (सजाना, अलंकृत करना) से बना है।
- यह मुख्यतः दीवारों एवं फर्शों पर बनने वाली सजावटी चित्रकला है।
- इसे राजस्थान और मध्य प्रदेश दोनों जगहों पर देखा जाता है। Wikipedia +2

सामग्री और तकनीक

- आधार तैयार करना: पहले दीवार या फर्श को साफ किया [illegible] है। माटी तथा गोबर

Ask anything

पर देखा जाता है। Wikipedia +2

सामग्री और तकनीक

- आधार तैयार करना: पहले दीवार या फर्श को साफ किया जाता है। माटी तथा गोबर मिलाकर पृष्ठ तैयार किया जाता है।
  Wikipedia +2
- रंग सामग्री: मुख्यतः सफेद पेस्ट (चाक पाउडर, चूना या अन्य प्राकृतिक सामग्री) तथा अक्साइड रंग प्रयोग होते हैं।
  Enroute Indian History +2
- उपकरण: रंग लगाने के लिए उँगली, सूती कपड़ा, तिनका, या हल्की ब्रश जैसी साधारण चीजें उपयोग की जाती हैं।
  Wikipedia +2
- डिज़ाइन की प्रक्रिया: ज्यामितीय पैटर्न (त्रिकोण, वृत्त, चतुर्भुज इत्यादि), पुष्प, पशु-प्राणी, देवता के प्रतीक आदि।
  Enroute Indian History +2

विषय एवं प्रतीक

(त्रिकोण, वृत्त, चतुर्भुज आदि), पुष्प, पशु-प्राणी, देवता के प्रतीक आदि।

Enroute Indian History +2

विषय एवं प्रतीक

- धार्मिक एवं शुभ प्रतीक जैसे कलश, श्री चिह्न, पार्वती-शिव, गणेश आदि।
  Enroute Indian History +2
- जीवन दर्शन एवं रोज़मर्रा की गतिविधियाँ — किसान, पशु, खेत व जल स्रोत आदि।
  Enroute Indian History +1
- पंक्षी, वृक्ष, वस्त्र निर्माण आदि चित्रित होते हैं। Enroute Indian History +1

सामाजिक-जातीय/संस्कृति-संबंध

- मांडना कला अधिकांशतः महिला कलाकारों द्वारा हस्तान्तरित होती है।
  Enroute Indian History +1
- यह कृषि, त्योहार, विवाह आदि सामाजिक अवसरों पर किए जाते हैं। Wikipedia +1

Ask anything

द्वारा हस्तान्तरित होती है।

Enroute Indian History +1

- यह कृषि, त्योहार, विवाह आदि सामाजिक अवसरों पर किए जाते हैं। Wikipedia +1
- वर्तमान समय में यह कला धीरे-धीरे घटती जा रही है क्योंकि मिट्टी की दीवारों की जगह पक्का भवन हो गया है, और युवा पीढ़ी इस कला को छोड़ रही है। historified +2
- कुछ व्यक्तियों तथा संस्थाओं ने इस कला को संरक्षित करने के प्रयास किए हैं (उदाहरण के लिए, कौशल्या देवी) 30 Stades +1

सीमाएँ, चुनौतियाँ और संरक्षण

- दीवारों पर सफेद वॉशिंग, रंगों का फीका पड़ना, नए निर्माण द्वारा पुरानी दीवारों का ध्वंस।
- दस्तावेजीकरण की कमी — कई डिज़ाइन मौखिक हस्तांतरण पर निर्भर हैं।

सीमाएँ, चुनौतियाँ और संरक्षण

- दीवारों पर सफेद वॉशिंग, रंगों का फीका पड़ना, नए निर्माण द्वारा पुरानी दीवारों का ध्वंस।
- दस्तावेजीकरण की कमी — कई डिज़ाइन मौखिक हस्तांतरण पर निर्भर हैं।
- संरक्षण एवं प्रचार की ज़रूरत।

2. फड़ / पिछवाई (Phad / Pichwai)

यह दो कलाएँ हैं, लेकिन अक्सर फड़ और पिछवाई को साथ-साथ चर्चा किया जाता है, क्योंकि दोनों का धार्मिक एवं कथात्मक महत्व है।

फड़ (Phad Painting)

Wikipedia +2

- इसे “मोबाइल मंदिर” की तरह उपयोग किया जाता है — भोपों (कहानी-बोलने वाले कलाकार/पुजारी) इसे लेकर चलते हैं और कथा सुनाते हैं। Wikipedia +2

- प्रमुख कथाएँ: *पाबुजी की फड़* (Pabuji Ki Phad) और *देवनारायण की फड़* (Devnarayan Ki Phad).

Wikipedia +4

तकनीक एवं सामग्री

- कपड़ा या कैनवा पहले अच्छी तरह तैयार किया जाता है।

Ask anything

Wikipedia +4

तकनीक एवं सामग्री

- कपड़ा या कैनवास को पहले अच्छी तरह तैयार किया जाता है।
- प्राकृतिक रंगों का उपयोग — जैसे पौधे आधारित रंग, खनिज रंग। Wikipedia +2
- चित्रण शैली: सीमाएँ स्पष्ट, रंग भरण, कथा-विभाजन (panel-wise), रूप-रेखा पर बल।
- विषय-वस्तु को कथानुसार पैनल विभाजित कर चित्रित किया जाता है।

कथानक एवं विषय

- *पाबुजी की फड़*: राजस्थान के लोक देवी-नायक पाबुजी के जीवन और कार्यों की कथा चित्रित। Wikipedia
- *देवनारायण की फड़*: देव नारायण नामक

Ask anything

5:50
ChatGPT
Sign up

रूप-रेखा पर बल।

- विषय-वस्तु को कथानुसार पै... कर चित्रित किया जाता है।

कथानक एवं विषय

- *पाबुजी की फड़*: राजस्थान के लोक देवी-नायक पाबुजी के जीवन और कार्यों की कथा चित्रित। Wikipedia
- *देवनारायण की फड़*: देव नारायण नामक लोक देवता की कथा, पूजा एवं लोक कथाएँ। Wikipedia
- विषय में युद्ध, भक्तों की सेवा, वन यात्रा, लोक देवताओं की मनोहारी झलक आदि आते हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक चुनाव

- भोप (Bhopas) इस कला को धार्मिक कथा प्रस्तुत करने में उपयोग करते हैं। Granthaalayah Publication +2
- यह कथा कलाव... लोक संगीत और

Ask anything

- भोप (Bhopas) इस कला को धार्मिक कथा प्रस्तुत करने में उपयोग

Granthaalayah Publication +2

- यह कथा कलावली, लोक संगीत और नाट्य के साथ मेल खाती है।
- फड़ कला आज भी जीवित है, और आधुनिक कलाकार इसे नए विषयों (रामायण, भगवद गीता आदि) से जोड़ रहे हैं। Wikipedia +1

पिछवाई (Pichwai / Pichhavai)

परिभाषा एवं उद्देश्य

- पिचवाई एक धार्मिक वस्त्र चित्रकला है, जो विशेषतः *श्रीनाथ जी* (कृष्ण रूप) मंदिरों में प्रयोग होती है। Indo Vacations +2
- "पिछवाई" नाम का अर्थ है "पीछे लटकने वाली" (back-hanging) — अर्थात् भगवान की मूर्ति [illegible]छे लटकी जाने

प्रयोग होती है। Indo Vacations +2

- "पिछवाई" नाम का अर्थ है "पीछे लटकने वाली" (back-hanging) — अर्थात् भगवान की मूर्ति के पीछे लटकी जाने वाली पृष्ठभूमि। Wikipedia +1

इतिहास एवं विकास

- यह मथुरा–उदयपुर/नाथद्वारा शैली से प्रभावित है। Wikipedia
- वाल्लभ संप्रदाय (विष्णु भक्ति) के प्रभाव से यह मंदिरों में विशेष महत्त्व प्राप्त करता है। Indo Vacations +1

विषय-वस्तु एवं शैली

- श्रीनाथ जी के विभिन्न रूप, लीला, रासलीला, कृष्ण-गोवर्धन आदि विषय। Wikipedia +2
- मौसम-त्योहार आधारित पिचवाई — प्रत्येक त्यौहार या ऋतु के ... ुसार अलग चित्रण। Wikipedia

- श्रीनाथ जी के विभिन्न रूप, लीला, रासलीला, कृष्ण-गोवर्धन आदि। Wikipedia +2

- मौसम-त्योहार आधारित पिचवाई — प्रत्येक त्यौहार या ऋतु के अनुसार अलग चित्रण। Wikipedia
- रंग एवं सजावट: अत्यंत सूक्ष्मता, जड़ी-चुड़ी सजावट, कीमती रंग, सोना-चांदी के लहजे। Wikipedia

सामाजिक एवं धार्मिक भूमिका

- मंदिरों में पूजा एवं अनुष्ठान के दौरान उपयोग।
- यह भक्तों को कृष्ण की कथाओं, लीलाओं को समझाने में सहायक।
- कलाकारों द्वारा आधुनिक पिचवाई शैली में इस कला को पर्यटन एवं व्यापार के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है।

5:50 0.07 KB/s 29

- कलाकारों द्वारा आधुनिक पिचवाई शैली में ... इस कला को पर्यटन एवं व्यापार के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है।

ChatGPT Sign up

3. शेखावाटी फ्रैसको / भित्ति चित्र (Shekhawati Fresco / Mural Painting)

क्षेत्रीय संदर्भ

- शेखावाटी (Shekhawati) राजस्थान का वह क्षेत्र है जिसमें हवाई (havelis) और भवनों की भित्ति चित्रों (murals / frescoes) की अधिकता है।
  Wikipedia +5
- प्रमुख जिलों में: झुंझुनू, सीकर, चूरू आदि।
  Wikipedia +1

इतिहास एवं विकास

- शेखावाटी भित्ति चित्रों की शुरुआत 17वीं–18वीं शत[illegible] तक जाती है।
  Wikipedia

Wikipedia +5

5:51

ChatGPT

Sign up

- प्रमुख ज़िलों में: झुंझुनू, सीक

Wikipedia +1

इतिहास एवं विकास

- शेखावाटी भित्ति चित्रों की शुरुआत 17वीं–18वीं शताब्दी तक जाती है। Wikipedia
- मुग़ल और जयपुरी शैली की छाप — स्ट्रिंग तकनीक, नियति रेखाएँ आदि। Wikipedia
- जयपुरी फ्रैसको तकनीक: पेंसिल रूप में आकृति बनाए जाने पर रंग भरा जाता था, और रंग को चूने की सतह में घुला दिया जाता था। Wikipedia

तकनीक और सामग्री

- भित्ति निर्माण: पहले दीवार में चूना-चुना पुताई (lime plaster) की जाती थी।
- रंग: प्राकृतिक रंग (खनिज, पौधों आधारित) मिश्रित चने के घोल में।

Ask anything

और रंग को चूने की सतह में बुना दिया जाता था। Wikipedia

ChatGPT

Sign up

तकनीक और सामग्री

- भित्ति निर्माण: पहले दीवार में चूना-चुना पुताई (lime plaster) की जाती थी।
- रंग: प्राकृतिक रंग (खनिज, पौधों आधारित) मिश्रित चूने के घोल में। Rajasthan Tour Planner +3
- रेखांकन: स्ट्रिंग (सूती धागा) में रंग छिड़क कर रेखा खींची जाती थी, फिर चित्र विस्तारित किए जाते थे। Wikipedia
- सजावट एवं किनारी काम (border work), पुष्पांकन, पैनल विभाजन आदि। Rajasthan Tour Planner +3

विषय-वस्तु और विशेषताएँ

- धार्मिक दृश्य: देवी-देवताओं, कृष्ण लीला, रामायण आदि। Wikipedia +2
- सामाजिक एवं ऐतिहासिक विषय: ब्रिटिश

Ask anything

work), पुष्पांकन, पैनल विभाजन आदि।

5:51 0.00 KB/s 29

Rajasthan Tour Planner +3

ChatGPT

Sign up

विषय-वस्तु और विशेषताएँ

- धार्मिक दृश्य: देवी-देवताओं, कृष्ण लीला, रामायण आदि। Wikipedia +2
- सामाजिक एवं ऐतिहासिक विषय: ब्रिटिश सरकार, आधुनिक गाड़ियाँ, वास्तुकला, जीवनशैली आदि। Wikipedia +2
- रोज़मर्रा का जीवन: किसान, पशु, बाजार, नदियाँ आदि। Wikipedia +1
- भित्ति चित्रों में कभी-कभी *नक्षत्र मंडल, राजनीतिक, यूरोपीय प्रभाव* देखने को मिलते हैं। Wikipedia +2
- फर्श, छत, गलियारों, आंतरिक एवं बाह्य दीवारों पर चित्र। Neemrana Hotels +2

कलाकार एवं सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका

- चित्रकारों को 'चि... या 'चेजर' कहा

Ask anything

- फर्श, छत, गलियारों, आंतरिक ...

दीवारों पर चित्र। Neemrana Hotels +2

कलाकार एवं सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका

- चित्रकारों को 'चितेरा' या 'चेजर' कहा जाता था। ये अक्सर कुम्हार जाति से होते थे। Rajasthan Tour Planner +2
- हावेलियों के निर्माण एवं सजावट में इन चित्रों का उपयोग मालिकों (merchant patrons) द्वारा किया जाता था।
- यह कला शेखावाटी क्षेत्र की सांस्कृतिक पहचान का हिस्सा बन गई।
- लेकिन 20वीं शताब्दी के मध्य से ये चित्र क्षय, पुताई, सफेदीकरण आदि से क्षीण हो गये। Wikipedia +2
- संरक्षण, पुनरुद्धार कार्य धीरे-धीरे हो रहे हैं (INTACH आदि) । Wikipedia

आधार

विषय

उपयोग

तकनीक

कलाकार / हस्तांतरण

गतिशीलता

संरक्षण चुनौतियाँ

Ask anythin